सीबीएसई कक्षा - 12 हिन्दी (केन्द्रिक) सेट-1
(दिल्ली) 2017

निर्देश:

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (15)

'आधुनिक भारतीय भाषाएँ' सुनकर आप इस भ्रम में न पड़ें कि ये सभी 'आज' की देन हैं। ये सभी भाषाएँ अति प्राचीन हैं। अनेक तो सीधे संस्कृत या वैदिक भाषा से जुड़ती हैं। वे इस अर्थ में आधुनिक हैं कि समय के साथ चलकर अतीत से वर्तमान तक पहुँची हैं और जीवंत और विकासशील बनी हुई हैं। उनके आधुनिक होने का एक कारण यह भी है कि आधुनिक विचारों को वहन करने में वे कभी पीछे नहीं रहीं। इनका साहित्य समय की कसौटी पर खरा उतरा है और ये सभी आधुनिक भारत की प्राणवायु हैं।
किसी भी भाषा का पहला काम होता है दो व्यक्तियों या दो समूहों के बीच संपर्क स्थापित करने का माध्यम बनना। यह मानव समूहों के बीच सेतु का काम करती है। इसे चाहे प्रकृति की देन मानिए चाहे ईश्वर की, भाषा से बड़ी कोई देन नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों में मानव की समस्त उपलब्धियाँ मूलतः भाषा की देन हैं।
अब जहाँ तक हिंदी का प्रश्न है, उसमें उपर्युक्त विशेषताएँ तो हैं ही, साथ ही सबसे निराली विशेषता है उसकी नमनीयता। इसमें स्वाभिमान है, अहंकार नहीं। हिंदी हर परिस्थिति में अपने आपको उपयोगी बनाए रखना जानती है। यह ज्ञान और शास्त्र की भाषा भी है और लोक की भी, उत्पादक की भी और उपभोक्ता की भी। इसीलिए यह स्वीकार्य भी है।

(क) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

(ख) 'आधुनिक' विशेषण से हम किस भ्रम में पड़ सकते हैं? उसे "भ्रम" क्यों कहा गया है? (2)

(ग) आज की भारतीय भाषाएँ किस अर्थ में आधुनिक हैं? दो कारणों का उल्लेख कीजिए। (2)

(घ) कोई भाषा किनके बीच पुल बनाने का काम करती है? कैसे? (2)

(ङ) हिंदी की निराली विशेषता क्या है? उसका आशय समझाइए। (2)

(च) हिंदी की स्वीकार्यता के दो कारण स्पष्ट कीजिए। (2)

(छ) 'नमनीयता' से लेखक का क्या आशय है? (2)

(ज) आशय स्पष्ट कीजिए: 'भाषा से बड़ी कोई देन नहीं है।' (2)

उत्तर- (क) आधुनिक भाषाएँ/हिन्दी भाषा/ आधुनिक भाषा हिन्दी
(अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य)

(ख)

- केवल वर्तमान से संबंधित होने का भ्रम
- केवल वर्तमान से जोड़ने के कारण

(ग)

- समय के साथ जीवंत और विकासशील
- आधुनिक विचारों को वहन करने में सक्षम

(घ)

- मानव समूहों के बीच
- संपर्क स्थापित करने का माध्यम बनकर

(ङ)

- नमनीयता
- प्रत्येक स्थिति में अपने को उपयोगी बनाए रखना
- नमनीयता का आशय स्वाभिमान होते हुए भी, अहंकार का न होना

(च)

- लोक और शास्त्र दोनों की भाषा
- बाजार की भाषा
- भाषा का लचीलापन
  (कोई भी दो बिंदु स्वीकार्य)

(छ)

- अहंकार रहित स्वाभिमान का होना
- हर परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को बदलने का गुण

(ज)

- भाषा से ही मनुष्यों के बीच आपसी संपर्क संभव
- विभिन्न क्षेत्रों की समस्त उपलब्धियाँ संभव

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (1×5=5)

आज खोले वक्ष

उन्नत शीश, रक्तम नेत्र

तुझको दे रहा हूँ, ले, चुनौती

गगनभेदी घोष में

दृढ़ बाहुदंडों को उठाए !

क्योंकि मैंने आज पाया है स्वयं का ज्ञान

क्योंकि मैं पहचान पाया हूँ कि मैं हूँ मुक्त, बंधनहीन

और तू है मात्र भ्रम, मन-जात, मिथ्या वंचना,

इसलिए इस ज्ञान के आलोक के पल में

मिल गया है आज मुझको सत्य का आभास

और ओ मेरी नियति !

मैं छोड़कर पूजा

- क्योंकि पूजा है पराजय का विनत स्वीकार-

बाँधकर मुट्ठी तुझे ललकारता हूँ,

सुन रही है तू?

मैं खड़ा तुझको यहाँ ललकारता हूँ!

(क) कवि की चुनौती देने की मुद्रा कैसी है?

(ख) चुनौती किसे दी जा रही है? उसे कवि क्या मानता है?

(ग) कवि को मिला ज्ञान और उसकी पहचान क्या है?

(घ) कवि पूजा को क्या मानता है और क्यों?

(ङ) काव्यांश का केंद्रीय भाव लिखिए।

उत्तर- (क) ललकारने वाली/चुनौतीपूर्ण/वक्ष खोले, उन्नतशीश, बाहुदंडो को उठाए (किसी एक बिंदु का उल्लेखअपेक्षित)

(ख)

- नियति को
- मन का भ्रम

(ग)

- स्वयं की पहचान
- मुक्त और बंधनहीन

(घ)

- पराजय की स्वीकृति
- पुरुषार्थ पर भरोसा होना/भाग्यवादी न होना

(ङ) पुरुषार्थ पर भरोसा करते हुए नियति या भाग्य की उपेक्षा करना/को चुनौती देना
(अन्य उपयुक्त उत्तर भी स्वीकार्य)

खण्ड-'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: (5)

(क) भारतीय संस्कृति

(ख) महिला सशक्तीकरण

(ग) मेरा प्रिय लेखक

(घ) कश्मीर समस्या

उत्तर- किसी एक विषय पर निबंध

- भूमिका/प्रस्तावना
- विषयवस्तु
- भाषा

4. सहकारी बैंक की एक शाखा अपने ग्राम में खोलने के लिए अनुरोध करते हुए ज़िला मुख्यालय में स्थित बैंक के प्रधान प्रबंधक को पत्र लिखिए। बैंक खोलने का औचित्य भी लिखिए। (5)

उत्तर- पत्र-लेखन

प्रारंभ और अंत की औपचारिकताएँ

विषय-वस्तु

भाषा एवं

अथवा

अपने क्षेत्र के सांसद को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिए कि आपके ग्राम में एक पुस्तकालय की स्थापना अपनी सांसद निधि से करवाएँ। इसका औचित्य भी समझाइए।

उत्तर- पत्र-लेखन

प्रारंभ और अंत की औपचारिकताएँ

विषय-वस्तु

भाषा एवं

5. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए: (1×5=5)

(क) संपादकीय का महत्व लिखिए।

(ख) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की लोकप्रियता के दो कारण लिखिए।

(ग) समाचारों के स्रोत से आप क्या समझते हैं?

(घ) स्टिंग ऑपरेशन के दो लाभ लिखिए।

(ङ) संपादन के सिद्धांतों में 'तथ्यपरकता' (एक्यूरेसी) का क्या आशय है?

उत्तर- (क) जन सामान्य से जुड़ी किसी घटना, समस्या या मुद्दे पर अखबार की राय या आवाज़ होती है।

(ख)

- चौबीस घंटे समाचार एवं सूचनाओं की उपलब्धता

- अनपढ़ दर्शक/श्रोता भी समाचार देख/सुन सकते हैं।
- त्वरित अपडेशन एवं सीधा प्रसारण की सुविधा
  (कोई भी दो बिंदु स्वीकार्य)

(ग) समाचारों में शामिल सूचनाओं और जानकारियों को जुटानेवाला व्यक्ति या संगठन

(घ)

- छिपी हुई सूचनाओं तथ्यों से लोगों को अवगत कराना
- भ्रष्टाचार एवं अनियमितताओं का पर्दाफ़ाश

(ङ) सही तथ्यों के साथ संपूर्ण यथार्थ की प्रस्तुति

6. 'स्वच्छ भारत अभियान' अथवा 'ज़रूरी है जल की बचत' विषय पर एक आलेख लिखिए। (5)

उत्तर- किसी एक विषय पर आलेख-लेखन

- विषय-वस्तु
- प्रस्तुति
- भाषा

7. 'मुझे जन्म देने से पहले ही मत मारो माँ !' अथवा 'जाति प्रथा : एक अभिशाप' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए। (5)

उत्तर-

- किसी एक विषय पर फ़ीचर-लेखन
- विषय-वस्तु
- अभिव्यक्ति
- भाषा

खण्ड-'ग'

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2×4=8)

तिरती है समीर-सागर पर

अस्थिर सुख पर दुख की छाया

जग के दग्ध हृदय पर

निर्दय विप्लव की प्लावित माया

यह तेरी रण-तरी

भरी आकांक्षाओं से,

घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर

उर में पृथ्वी के आशाओं से

नवजीवन की, ऊँचाकर सिर,

ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल !

(क) कवि ने निर्दय किसे कहा है और क्यों?

(ख) सोए हुए अंकुरों के जग जाने का कारण क्या है? उनमें आशाओं का संचार कैसे हुआ?

(ग) बादल को 'ऐ विप्लव के बादल' क्यों कहा गया है?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए:
तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया

उत्तर- (क)

- बादल रूपी क्रांति को
- विध्वंस एवं सृजन की शक्ति होते हुए भी न आने के कारण

(ख)

- बादलों की गर्जना रूपी क्रांति का उद्घोष
- व्यवस्था परिवर्तन की संभावनाओं की अनुभूति से

(ग)

- बादल क्रांति के प्रतीक
- गर्जन-वर्षण से व्यापक परिवर्तन का सामर्थ्य

(घ) जैसे सागर का जल ऊपर बहने वाली हवा से तरंगित है, वैसे ही दुःख की छाया से जीवन के सुख अस्थिर हो जाते हैं।

अथवा

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास

पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास

जब वे दौड़ते हैं बेसुध

छतों को नरम बनाते हुए

दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए

छतों के खतरनाक किनारों तक

उस समय गिरने से बचाता है उन्हें

सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत

(क) काव्यांश में 'वे' / 'उनके सर्वनाम किनके लिए प्रयुक्त हुए हैं? वे क्या विशेष कर रहे हैं?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए:
जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास

(ग) 'दौड़ते हैं बेसुध' - उनकी बेसुधी के दो उदाहरण लिखिए।

(घ) 'छतों को नरम' बनाना और 'दिशाओं को मृदंग की तरह' बजाना का भाव लिखिए।

उत्तर- (क)

- बच्चों के लिए
- पतंग उड़ा रहे हैं

(ख)

- कपास की भाँति बच्चों का मन कोमल व नरम होता है।
- बच्चे इस दुनिया को निश्छल और निर्मल भावों से भर देते हैं।

(ग)

- कठोर छत को नरम समझना
- खतरनाक किनारों तक वेग में जाना

(घ)

- छत की कठोरता की परवाह न कर उस पर कोमल पैरों से दौड़ना
- सभी दिशाओं में उनका उल्लासपूर्ण शोर गूँजता है।

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×3=6)

ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा।

बिबिध जतन करि ताहि जगावा।।
जागा निसिचर देखिअ कैसा।
मानहुँ कालु देह धरि बैसा।।

(क) काव्यांश का अलंकार सौंदर्य समझाइए।

(ख) काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।

(ग) काव्यांश किस छंद में लिखा गया है? उसका लक्षण बताइए।

उत्तर- (क)

- अनुप्रास-
- 'आवा----जगावा।।', 'कैसा---वैसा।।'-में
  (कोई एक उदाहरण)
- उत्प्रेक्षा-
  'जागा निसिचर देखिअ कैसा।
  मानहुँ काल देह धरि वैसा।।'
  कुंभकरण की विकरालता के लिए मृत्यु जैसा उपमान

(ख)

- अलंकारों का सहज प्रयोग
- भावानुकूल शब्दावली
- अवधी भाषा
  (किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

(ग)

- चौपाई छंद

- सोलह-सोलह मात्राओं के चार चरण
  (मात्र छंद का नाम उल्लेख करने पर अंक दिए जाएँ।)

10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (3+3=6)

(क) कैसे कह सकते हैं कि 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता शारीरिक विकलांगता की चुनौती झेल रहे व्यक्ति का उपहास करती है? दो उदाहरण कविता से दीजिए।

(ख) सीधी बात भी कब टेढ़ी हो कर उलझती चली जाती है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) फ़िराक की संकलित रुबाइयों में कवि ने जो वात्सल्य का चित्र उकेरा है उस पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- (क)

- कविता शारीरिक चुनौतियाँ झेल रहे व्यक्ति के माध्यम से बाजार की क्रूरता बताती है
- दूरदर्शन वालों का संवेदनहीन रवैया, अपाहिज को रुलाने की योजना
- क्यों अपाहिज है? आपका अपाहिजपन दुःख देता है?- जैस उपहासपूर्ण प्रश्न पूछना
  (अन्य उपयुक्त उदाहरण भी स्वीकार्य)

(ख)

- शब्द-जाल में उलझकर
- कथ्य के अनुकूल भाषा का प्रयोग न
- कर पाने के कारण
- शब्द-चयन की प्रशंसा सुनने के लोभ में पड़कर

(ग)

- माँ के आँचल में खिलखिलाते बच्चे का वर्णन
- माँ द्वारा बच्चे को हाथों में झुलाना, हवा में उछालना और पकड़ना
- बच्चे को नहलाना, कंघी करना, कपड़े पहनाना जैसे वात्सल्य-भरे कार्य
- दीपावली की शाम चीनी के खिलौनों और लावे से सजे बच्चों के घरौंदों में दीपक जलाकर
- आकाश के चाँद को देखकर मचल रहे बच्चे को दर्पण देकर बहलाना
  (किन्हीं तीन बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2×4=8)

वह रूप का जादू है, पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली

हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है!

(क) किस जादू की चर्चा हो रही है? उसे जादू क्यों कहा गया है?

(ख) चुंबक और लोहे का उदाहरण क्यों दिया गया है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) इस जादू के असर में मन की भूमिका क्या है?

(घ) आपके विचार से इस जादू से छुटकारा पाने का उपाय क्या हो सकता है?

उत्तर- (क)

- बाजार के रूप का जादू
- आकर्षण और प्रभाव के कारण

(ख)

- आकर्षण को स्पष्ट करने के लिए
- चुंबक के समान ही बाजार का आकर्षण भी कुछ विशेष स्थितियों में ही प्रभावी

(ग) अभावग्रस्त मन पर जादू का गहरा प्रभाव, चाहे जेब भरी हो या खाली

(घ)

- आत्मसंयम
- ज़रूरतों और प्राथमिकताओं की पहचान
  (अन्य तर्कपूर्ण उत्तर भी स्वीकार्य)

12. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (3×4=12)

(क) डॉ. आंबेडकर जाति प्रथा को श्रमविभाजन का स्वाभाविक विभाजन क्यों नहीं मानते? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ख) "पहलवान की ढोलक" कहानी में कहानीकार ने महामारी फैलने से पूर्व और उसके बाद गाँव के सूर्योदय और सूर्यास्त में अंतर कैसे प्रदर्शित किया है?

(ग) "माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नामोनिशान नहीं है।" - 'काले मेघा पानी दे' कहानी की इस टिप्पणी पर आज के संदर्भ में टिप्पणी कीजिए।

(घ) भक्तिन महादेवी जी की समर्पित सेविका थी, फिर भी लेखिका ने क्यों कहा है कि भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा?

(ङ) जीवन के संघर्षों ने चार्लो चैप्लिन के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया? समझाइए।

उत्तर- (क)

- जाति-प्रथा में श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी
- निर्धारित पेशा/ कार्य को स्वीकार करने की विवशता
- प्रतिभा, रुचि और क्षमता की उपेक्षा

(ख) महामारी फैलने के पूर्व-

सूर्योदय होते ही ढोल की आवाज़ पर कसरत शुरु हो जाती थी और सूर्यास्त होते ही सब मिलकर आनंद मनाते थे।

महामारी फैलने के बाद-

कराहते हुए लोग बीमारों के यहाँ पहुँचकर धैर्य बँधाते और अपनी चिंता न करते हुए दूसरों का साहस बढ़ाते थे। सूर्यास्त होते ही सभी अपने-अपने घरों में घुस जाते क्योंकि उनकी बोलने की शक्ति समाप्त हो जाती थी।

(ग)

- स्वार्थपूर्ति को सर्वोपरि मानना
- दूसरों के भ्रष्टाचार की बातें करना लेकिन स्वयं उसमें लिप्त रहना
- अपने आचार-विचार पर ध्यान न देना

(घ)

- भक्तिन के व्यक्तित्व में कुछ दुर्गुण भी
- अपनी कमियों को उचित ठहराने के लिए शास्त्रों का सहारा लेना
- संभालकर रखे हुए पैसे को न ढूँढ पानां
- भदेसपन/देहातीपन लेखिका को पसंद नही था।

(ङ)

- जीवन की बाधाओं का डटकर मुकाबला करने की क्षमता का विकास
- जरुरतमंद लोगों की सहायता की प्रवृत्ति
- स्नेह, करुणा और मानवता के जीवन-मूल्यों की प्राप्ति

13. यशोधर अपने परिवार से किन जीवनमूल्यों की अपेक्षा रखते थे? उनके मूल्य उन्हें ‘समहाउ इंप्रोपर क्यों लगते थे? स्पष्ट कीजिए।(7)

उत्तर-

- यशोधर पंत द्वारा अपेक्षित जीवन-मूल्य
- परंपरागत रीति-रिवाज़ों को मानना
- संयुक्त परिवार-प्रथा में विश्वास
- गरीब रिश्तेदार की मदद
- भारतीय त्योहारों को मानना उन्हें परिवारजनों के जीवनमूल्य 'समहाउ इंप्रोपर'
- पाश्चात्य रीति-रिवाजों को अपनाना दिखावे की जिंदगी
- स्वार्थपूर्ति और धन-प्राप्ति की लिप्सा
  (अन्य बिंदु भी स्वीकार्य)

14. (क) सौंदलगेकर एक आदर्श अध्यापक क्यों प्रतीत होते हैं? 'जूझ' कहानी के आधार पर उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।(8)

(ख) 'डायरी के पन्ने' के आधार पर महिलाओं के प्रति ऐन फ्रेंक के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- (क) सौंदलगेकर अपने छात्रों की प्रत्येक जिज्ञासा के लिए उपलब्ध रहते थे, धैर्यपूर्वक समझाते थे एवं प्रोत्साहन देते थे।

विशेषताएँ

- अध्यापन कार्य के प्रति समर्पण
- काव्य-गायन की कला
- रस-छंद का ज्ञान
- बच्चों को भाव ग्रहण कराने के साथ तुलनात्मक अध्ययन कराने में समर्थ
  (किन्ही तीन बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

(ख)

- स्त्री को शारीरिक रूप से कमजोर मानकर संतान प्रजनन तक सीमित रखने की साजिश
- स्थितियों में परिवर्तन भी-शिक्षा, काम तथा प्रगति ने स्त्रियों की आँखें खोली
- आज भी समाज द्वारा स्त्रियों को समानता का व्यवहार एवं आर्थिक आजादी नहीं दी जाती
- समाज के लिए कष्ट भोगने पर भी महिलाओं को सैनिकों या शहीदोंवाला सम्मान नहीं मिलता
- आधुनिक महिलाएँ पूर्ण स्वतंत्रता चाहती हैं।